डा० अनिरुद्ध प्रसाद
महाराजा कॉलेज, आरा

एम० ए० (हिन्दी) II सेमेस्टर

हिन्दी साहित्य का इतिहास (आधुनिक काल)

पंचम पत्र

प्रश्न: हिन्दी प्रगतिवादी कविता के संदर्भ में अभिव्यक्ति सौष्ठव की समस्या पर प्रकाश डालिए।

उत्तर कोई युग अनायास आरंभ नहीं होता। प्रगतिवादी कविता के संबंध में भी यही समझना चाहिए। युग के परिवर्तन के साथ नये विचार और भाव-भंगिमाओं का जन्म होता है। पुरानी चीजें या तो लुप्त होती जाती है या मिटा दी जाती है और नयी भावनाओं का जन्म होता है। प्रगतिवादी काव्य के संदर्भ में भी ऐसा ही सोचना चाहिए। छायावादी काव्य की सूक्ष्मता एवं मखमली रुझान के विरुद्ध प्रगतिवादी काव्य ने जन्म लिया। छायावादी काव्य अपने कलेवर में बहुत सी पुरानी रूढ़ियों को लेकर चल रही थी जिसमें अतीत के प्रति मोह और रहस्यवाद का अवगुंठन भी था। समाज की तात्कालिक समस्याओं के प्रति बेरुखी और कल्पना-वाद के विरुद्ध ही प्रगतिवाद का जन्म हुआ था। प्रगतिवाद के संबंध में यह स्पष्ट रूप से समझ लेना चाहिए कि यह मार्क्स के सिद्धांत द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद के आधार पर टिका साहित्य है जिसका उद्देश्य सर्वहारा वर्ग के प्रति सहानुभूति एवं पूँजीवाद के शोषण से उसे बचाना है। यहाँ मजदूरों एवं किसानों को उनके अधिकारों के प्रति सचेत करना है एवं उसे शोषण से मुक्ति दिलाना है। इस तरह से प्रगतिवाद साम्यवाद के प्रति अपनी उदारता को प्रकट करता है। छायावाद में जहाँ कवि प्रकृति के सौंदर्य में ही उलझ कर रह जाता है, वहाँ प्रगति यथार्थ की भूमि पर खड़ा वो वाद है जो मानव-मुक्ति के सपनों को लेकर चलता है।

P. T. O

प्रगतिवादी काव्य जन-गण-मन की भावनाओं के अनुकूल चलने वाला साहित्य है। प्रगतिवादी काव्य में मानव-मूल्यों की रक्षा की बात कही गयी है एवं शोषण और अत्याचार के विरुद्ध यहाँ संघर्ष का आह्वान है। इसलिए इस काव्य में छायावादी सौष्ठव भावना देखने को नहीं मिलती है। इस संदर्भ में प्रसिद्ध आलोचक डा० नगेन्द्र का कहना है — "प्रगतिवादी काव्य ने अपनी अभिव्यक्ति के उपकरण आग्रहपूर्वक साधारण स्वस्थ जन-जीवन से ग्रहण किया है। वह अपने काव्य-चित्रों का आधार नित्य-प्रति के व्यवहार को बनाता है। इसकी अलंकरण सामग्री सूक्ष्म एवं कोमल है या चुनी हुयी नहीं है, वह स्थूल और प्राकृत है। एक वाक्य में, ~~इसकी अलंकरण सामग्री~~ इसकी कला-विकास रूप-रंग और रोमांस से प्रेम नहीं करती। उसमें रीतिकाल की चोलियाँ और छायावाद की अमूर्त मधुचर्या नहीं है। अतः एव प्रगतिवादी काव्य खरी, खड़ी और तीखी होती है — क्योंकि मुख्यतः वह भावात्मक न होकर आलोचनात्मक है।"

प्रगतिवादी काव्य के सौंदर्य-चेतना पर प्रकाश डालते हुए डा० रामविलास शर्मा ने लिखा है कि सौंदर्यबोध एक संश्लिष्ट इकाई है। सौंदर्य प्रकृति में है, मनुष्य में भी है। उसकी अनुभूति व्यक्तिगत होती है और समाजगत भी। व्यक्ति समाज का अंग है, इसलिए समाज निरपेक्ष व्यक्ति की सत्ता होती है, न समाज निरपेक्ष सौंदर्यानुभूति की संभावना होती है। कला के विभिन्न रूपों में इन्द्रिय-बोध, भावों और विचारों का भिन्न अनुपात होता है, सामाजिक विकास से सम्बद्ध कला के अनेक तत्व जहाँ आर्थिक जीवन पर निर्भर होते हैं, उनका एक स्पष्ट वर्ग-आधार होता है, जहाँ अनेक तत्व अपेक्षाकृत स्थायी होते हैं।

P.T.O

Scanned with CamScanner

प्रगतिवादी काव्य का दर्शन भाव प्रधान एवं वैयक्तिक न होकर वस्तु प्रधान और सामाजिक प्रधान होता है। काव्य की दृष्टि से इसका सौंदर्य बोध, पूँजीवादी और मध्यवर्गीय सौंदर्य की भावना की प्रतिक्रिया से पीड़ित रहा है, जिससे उसका भावावेग किसी जनवादी यथार्थवाद तथा जीवन सौंदर्य को वाणी देने के बदले केवल धनपतियों या मध्यवृत्ति वालों के प्रति विद्वेष और विक्षोभ प्रकट करता है। नया लोक और नवीन मानवता की सशक्त चेतना के जागरण के गान के स्थान पर, उसमें भूखे-नंगे, श्रमिक, कृषकों का चित्रण मिलता है। मध्यवर्गीय कुंठित बुद्धिजीवियों की मानसिक प्रतिक्रियाओं का हुंकार सुनायी पड़ने की स्थिति, नवीन जनभावना की अभिव्यक्ति न देकर केवल कुछ तात्कालिक परिस्थितियों के कोरे राजनीतिक बयानबाजी के सिवा और क्या है? यही कारण रहा है कि प्रगतिवादी काव्य में सौंदर्य-चेतना का विकास उस स्तर पर नहीं हुआ है जैसा कि छायावादी काव्य में।

प्रगतिवादी काव्य की जो अभिव्यक्ति है उसमें टूटी हुयी झोपड़ी में भी नए सौंदर्य बोध के दर्शन होते हैं। यहाँ केवल निर्जीव संवेदना तथा व्याकुलता नहीं दिखलाई पड़ती है। जो मन में सम्यक साधना है तथा हृदय में जागृति का बोध है तो वह सर्वहारा की चेतना है। इसका सौंदर्यबोध उस मामले में भिन्न है यहाँ रीतिकाल की नायिका के श्रृंगार का वर्णन होता था। प्रगतिवादी कवि छायावादी शब्दों की रेशमी और रंगीन उपमाओं को ग्रहण नहीं करता है। यहाँ कविताओं में सामूहिकता की भावना का विकास दिखलाया गया है, वैयक्तिक सौंदर्य की जगह समूह का सौंदर्य प्रकट होता है। यहाँ वैयक्तिक चेतना का तिरस्कार है और मानव जाति के स्थायी सौंदर्य को प्रकट किया गया है। जहाँ शौर्य है, श्रम है और साहस है।

P.T.O

इसप्रकार साहित्य की सृजन प्रक्रिया से सत्य है कि वह जीवन की भावगत व्याख्या है। वह जीवन की अंतर्मुख साधना है। अतः स्वभाव से ही साहित्यकार में अंतर्मुखी वृत्ति का प्राधान्य होता है। वह जितना महान होगा, उसका अहं उतना ही तीखा व विशिष्ट होगा, जिसका पूर्ण सामाजीकरण असम्भव नहीं है।"

जहाँ तक प्रगतिवादी साहित्य के स्वरूप की बात है तो 1936 ई० में प्रगतिशील लेखक संघ की घोषणा पत्र में कहा गया था— "प्रगतिवादी साहित्य वह है, जिसमें साहित्य को पुजारियों, पंडितों और दूसरे अप्रगतिशील वर्गों के आधिपत्य से निकालने की क्षमता हो, जिसका जनता के जीवन से निकट का संबंध हो, जो भारतीय सभ्यता की परंपराओं की रक्षा करते हुए अपने देश की पतनोन्मुखी प्रवृत्तियों की निर्दयता से आलोचना करता हो, जो हमारे वर्तमान जीवन के मौलिक तथ्यों— रोटी दरिद्रता, सामाजिक अवनति और राजनीतिक पराधीनता के प्रश्न का समन्वय कर सके, जो हमारी प्रियतम रूढ़ियों को भी बुद्धि की कसौटी पर कसने की सामर्थ्य रखता हो, जो हमें कर्मण्य बना सके और हम में संगठन की शक्ति ला सके।"

भारतीय साहित्यकारों का धर्म है कि वह भारतीय जीवन में पैदा होने वाली क्रांति को शब्द और रूप दें और राष्ट्र को उन्नति मार्ग पर चलने में सहायक हो। करे। यही प्रगतिवादी काव्य का मूलमंत्र है।

Scanned with CamScanner